Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

▪ रामदरश मिश्र की कविताओं में सामाजिक, प्राकृतिक और व्यक्तिगत संवेदनाओं का चित्रण

▪ *[1]सुनीता, [2]डॉ. अंकित*

▪ *[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक*

▪ *[1–2]विभाग: हिन्दी, आई. ई. सी. विश्वविद्यालय, बद्दी (हि. प्र.),*

▪ **सार**

▪ रामदरश मिश्र की कविताएँ जीवन, प्रकृति, और सामाजिक मुद्दों के सूक्ष्म चित्रण से भरपूर हैं। उनके पहले काव्य संग्रह ''पथ के गीत'' में छायावादी युग की रोमांटिकता के साथ–साथ सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता भी स्पष्ट होती है। इन कविताओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों, स्नेह, मानवता और नारी गरिमा को दर्शाया गया है। मिश्र जी की कविताएँ व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक घटनाओं का गहन विश्लेषण करती हैं। उनके दूसरे संग्रह ''बैरंग–बेनाम चिट्ठियाँ'' में संवेदनशीलता, लोक संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण है। मिश्र जी की कविताएँ समाज और व्यक्ति दोनों के अस्तित्व की कठिनाइयों को व्यक्त करती हैं, साथ ही यह संघर्ष और परिवर्तन की ओर प्रेरित करती हैं। इन कविताओं में बिम्बात्मकता और सरलता से मानवता के सवालों और अनुभवों को व्यक्त किया गया है।

▪ **मुख्य शब्दः** रामदरश मिश्र, कविता, छायावादी, प्रकृति, सामाजिक जागरूकता, संवेदनशीलता, लोक संस्कृति, बिम्बात्मकता, अस्तित्व।

- **भूमिका**
- संस्कृत शब्द ''काव्य'' का अर्थ ''साहित्यिक रचना'' है। यहीं से अंग्रेजी शब्द ''पोएट्री'' की उत्पत्ति हुई है। कवि, जिसका अर्थ है ''वह व्यक्ति जो रचनात्मकता, कल्पना और विचारों की अभिव्यक्ति में निपुण हो,'' इस शब्द का व्युत्पत्तिगत पूर्वज है। कविताएँ व्यक्तिगत भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने के अलावा मानव स्वभाव, संस्कृति और समाज में गहराई से उतरने के लिए लिखी जाती हैं। कविता एक कला रूप है जो अपने कौशल, मौलिकता और गूंजती गुणवत्ता के माध्यम से भावनाओं, विचारों और आख्यानों को व्यक्त करती है। यह जीवन के उन अमूर्त पहलुओं को उजागर करती है जिन्हें शब्दों में बयां करना कठिन है। कविता एक संवेदनशील साहित्यिक शैली है जो विचारों, भावनाओं और जीवन की घटनाओं को व्यक्त करती है।
- कई विद्वानों ने यह समझने की कोशिश की है कि कविता क्या है, लेकिन ज्यादातर इस बात पर सहमत हैं कि यह रचनात्मक लेखन है जो अमूर्त विचारों, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा और रूप का उपयोग करता है। छंद, अनुप्रास, अलंकार, बिम्ब, प्रतीकवाद और बिम्बात्मकता कविता में आम हैं, जो अक्सर जटिल और सूक्ष्म मुद्दों से निपटती है। कविताएँ हमें जीवन के उन सूक्ष्म पहलुओं को देखने में मदद करती हैं जिन्हें हम अन्यथा शायद नजरअंदाज कर दें।[16]
- एक परिभाषा के अनुसार, कविता एक विशिष्ट कला विधा है। कविता की कलात्मक प्रक्रिया में अमूर्त विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए

[16] मिश्र रामदरश एवं स्मिता मिश्र रचनावली भाग 1, प्रथम सं. 1999, नमन प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 4

संगीत संकेतन, मौखिक शब्द और अन्य ध्वनि तत्वों का उपयोग शामिल है। कविताएँ केवल पृष्ठ पर लिखे शब्दों से कहीं अधिक हैं; वे कला की ऐसी कृतियाँ हैं जिनमें राग, ध्वनि और अन्य संवेदी तत्व समाहित होते हैं। कविता एक नाजुक और रूपकात्मक कला रूप है जिसका उपयोग कवि विचारों को व्यक्त करने के लिए करते हैं।

- किसी विशिष्ट बिंदु तक पहुँचना ही कविता का प्राथमिक उद्देश्य है। कविता किसी विचार, भाव या घटना की परिष्कृत और गहन अभिव्यक्ति है। कविता में व्यक्ति के अंतरतम विचारों, भावनाओं और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने की क्षमता होती है। इसके अलावा, यह सामाजिक सत्यों, दुखों और विवादों को भी व्यक्त करती है। कविता हमें केवल व्यक्तिगत जीवन से कहीं आगे दिखाती हैय यह सामुदायिक मन और समग्र रूप से सामाजिक अस्तित्व के मुद्दों पर प्रकाश डालती है। कविताएँ अपने सौंदर्यात्मक मूल्य के अलावा, मानवीय स्थिति और समग्र विश्व के बारे में कवि के विचारों और भावनाओं के माध्यम का काम करती हैं। कविता उन भावनाओं और विचारों को कुशलता से पकड़ती है जिन्हें शब्दों में बयां करना कठिन होता है। कविता गहन विचारों को समाहित करती है और उन विचारों को एक विशिष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक ढाँचे में व्यक्त करती है।
- **रामदरश मिश्र की कविताओं का अध्ययन**
- **सड़क के गीत**
- उनका पहला काव्य संग्रह छायावादी युग के रूमानी सार के साथ–साथ राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों के प्रति गहरी जागरूकता को भी दर्शाता है। ''पथ के गीत'' का प्रकाशन 1951 में हुआ था, जिसे उत्तर प्रदेश के बलिया स्थित

राजेंद्र एंड ब्रदर्स ने जीवंत किया था। इस संग्रह में मिश्र जी की 1945–46 से लेकर 1951 तक की संगीत रचनाएँ शामिल हैं। इस संकलन को ''गीत संग्रह'' कहना ज्यादा उचित होगा, क्योंकि इसमें शामिल रचनाएँ मुख्यतः गीत हैं। इस संकलन की प्रस्तावना आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखी थी, जो इसके महत्व को और बढ़ा देती है। ये धुनें छायावादी संगीत से प्रेरित हैं। इनमें प्राकृतिक जगत के चित्रण, स्नेह, मानवता के सार और नारी गरिमा के सम्मान सहित अनेक प्रवृत्तियाँ समाहित हैं। कवि ने प्रकृति के भावात्मक सार को कुशलता से पिरोकर वियोग की पीड़ा को कलात्मक रूप से चित्रित किया है। कवि कभी–कभी प्रतीकों और सजीव बिम्बों का उपयोग करके अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

- मिश्र जी ने इन धुनों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं – ''काशी आगमन पर, कविता और उसके परिवेश के सार की मेरी समझ सघन होने लगी, तथापि छायावादी कवियों के साथ मेरी बातचीत के माध्यम से ही मेरे भीतर छायावादी भावनाएँ प्रगाढ़ और विकसित होने लगीं।'' मेरी भावनाएँ उड़ान भरने लगीं, प्रकृति के मनोरम दृश्यों से मानवीय सौंदर्य के आकर्षण की ओर, और फिर हमारे सामने आने वाली चुनौतियों में निहित उल्लास की ओर।
- सबसे पहले, प्राकृतिक जगत पर विचार करें। यह संकलन प्रकृति को विविध रूपों में प्रस्तुत करता है। कभी यह प्रोत्साहन और सहारे का स्रोत बनती है, तो कभी अकेली। कभी यह विभिन्न प्रतीकों, संकेतों और दृश्यों के माध्यम से प्रकट होती है। कवि उस पीड़ा और व्यथा को व्यक्त करता है जो अलगाव से उत्पन्न होती है। ''कौन'' राग में प्राकृतिक जगत के मार्मिक चित्रण पर विचार करें।
- गाँव की परियाँ घास के मैदानों के खिले हुए फूलों में खो जाती हैं। मधुरता से साक्षात्कार की कैसी लालसा मेरी आँखों को आलोकित करेगी?

- ''फागुन रात'', ''पावस गीत'', ''सर्दी में'' और ''सरसों का वन'' जैसे गीत विभिन्न ऋतुओं के मनमोहक आकर्षण को दर्शाते हैं। ये धुनें स्नेह और वियोग की पीड़ा, दोनों को प्राकृतिक दुनिया के परिप्रेक्ष्य में व्यक्त करती हैं।
- गीतों का यह संकलन कवि की व्यक्तिगत यात्राओं और संघर्षों को दर्शाता है। कभी–कभी वे करुणा का प्रदर्शन करते हैं, तो कभी प्रतिबद्धता का। इन धुनों में डूबते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि कठिनाइयों और उथल–पुथल की गहराइयों से ऊपर उठा है।[17]
  - तूफानों के बीच भी जीवन दिन के उजाले की चमक के इर्द–गिर्द घूमता है।
    - अस्तित्व चट्टानों से विजयी भाव से उभरता हुआ जीवंत झरना है।
    - मैं छाया की छतरी के नीचे रुककर गहरी सांस लेना चाहता हूं।
- हालाँकि, ऐसे लोग भी हैं जो दावा करते हैं कि दिन और रात दोनों में यात्रा करना अस्तित्व के सार को दर्शाता है।
- कवि अपनी यात्रा में कठिनाइयों का सामना करता है
  - संकटों और कठिनाइयों को विकास के अवसर के रूप में स्वीकार करना और उनसे अंतर्दृष्टि प्राप्त करना,
    - मेरी यात्रा के अनूठे पहलू सौ गुना बढ़ जाते हैं।
  - फिर भी, यह केवल उनमें ही था कि मैं अपनी कमियों का प्रतिबिंब देख सकता था।[18]

[17] मिश्र रामदरश एवं स्मिता मिश्र रचनावली, दिल्ली, नमन प्रकाशन, भाग 1, प्रथम, वर्ष–1999, पृ0–4
[18] मिश्र रामदरशएवं स्मिता मिश्र रचनावली, दिल्ली, नमन प्रकाशन, भाग 1, प्रथम, वर्ष–1999, पृ0–4

- नारी से प्रेरित प्रेरणा 'गति' में, कवि का नारी–संबंधी दृष्टिकोण प्रसाद, निराला और अन्य की रचनाओं से प्रभावित प्रतीत होता है। नारी की शक्ति से प्रेरित होकर, कवि अस्तित्व के प्रत्येक क्षण को पार करता है और निरंतर प्रगति करता रहता है।

- 'आप भोर में आशावाद की प्रारंभिक किरण हैं।'
- आप शक्ति के पुनरुत्थान का प्रतीक हैं, स्वप्न जैसी दृष्टि की चमक से जगमगाते हैं।
- जैसे ही बादल एकत्रित होते हैं और मेरी यात्रा पर छायाओं की झड़ी लगा देते हैं
- आकार में चमकते हुए, आप प्रकाश की किरण का प्रतीक हैं।[19]
- इस संकलन में कवि के प्रारंभिक वर्षों की धुनें शामिल हैं। इस जगह, प्राकृतिक दुनिया में, ''कश्मीर में बसंत'' कविता न केवल स्नेह और स्त्री आकर्षण के विषयों को समेटे हुए है, बल्कि आधुनिक परिदृश्य का मार्मिक चित्रण भी करती है। ''मानें क्या दिवाली हम'' कविता स्वतंत्रता के बाद के युग के कई तीखे विरोधाभासों को उजागर करती है, और इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे संपन्न वर्ग उन गरीबों की दुर्दशा से पूरी तरह अनजान बना हुआ है, जो पीड़ित हैं और जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।
- पूरे केबिन के भीतर
- पोषण की आवश्यकता वाले परिवार
- दिवाली तब प्रज्वलित होती है जब कोई व्यक्ति अपने सच्चे स्वरूप को अपनाता है।[20]

[19] मिश्र रामदरशएवं स्मिता मिश्र रचनावली, दिल्ली, नमन प्रकाशन, भाग 1, प्रथम, वर्ष–1999, पृ0–9

- यह अभाव कवि का एक निजी अनुभव है जिसे उन्होंने बचपन में भोगा था। यह महत्वपूर्ण विरोधाभास कवि के दृष्टिकोण से किस प्रकार लुप्त हो जाता है? ऐसा कम ही होता है। परिणामस्वरूप, विद्रोही की 'मानें क्या दिवाली हम' और 'पर विद्रोही कब सुनता है' जैसी प्रभावशाली कविताएँ इस संकट के बाद उत्पन्न होने वाली विषमताओं और विरोधाभासों को अभिव्यक्त करती हैं। मिश्र की संगीत रचनाओं पर डॉ. गुरुचरण सिंह के दृष्टिकोण निश्चित रूप से उल्लेखनीय हैं:
- मिश्रा सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों के प्रति जागरूकता व्यक्त करने के लिए संगीत को एक माध्यम के रूप में प्रयोग करते हैं। उनका संगीत ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेशों में पाए जाने वाले पारिस्थितिक मुठभेड़ों को दर्शाता है। उनकी धुनें एक जीवंत भावनात्मक जीवंतता का संचार करती हैं। एक जीवंत समय की अनुभूति होती है, और कभी–कभी, गहन एकांत के बीच खुशी की अभिव्यक्ति भी होती है। इन धुनों में मुख्यतः अवज्ञा, क्रोध और इसी तरह की भावनाओं का अभाव है। ये धुनें भावनाओं के सार को मूर्त रूप देती हैं, जो किसी भी गीत की मूलभूत आवश्यकता है। मिश्राजी अपनी संगीत रचनाओं में ताजगी के महत्व पर जोर देते हैं। समकालीन जागरूकता, जीवंत कलात्मकता और लोक–प्रेरित सार इन धुनों को जीवंत बनाए रखते हैं।
- कवि ने ''हे राष्ट्रपिता,'' ''बापू को,'' और ''मालवीय जी की चिता'' जैसी रचनाओं में राष्ट्र की भावनाओं को भावपूर्ण श्रद्धांजलि के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उनके स्वर ''15 अगस्त'' गीत में भी शामिल हैं। इस समय, अग्निकुंडों से मधुर झंकार की ध्वनि निकल रही है।[21]

[20] मिश्र रामदरश, मेरे प्रिय गीत, दिल्ली, कंदर्प प्रकाशन, वर्ष–1985, पृ0–221
[21] मिश्र रामदरश, मेरे प्रिय गीत, दिल्ली, कंदर्प प्रकाशन, वर्ष–1985, पृ0–10

- एक नई आग भड़क उठी, जिससे धुएं का पर्दा फट गया।

- मिश्र जी की धुनों के दायरे में विमल कुमार जी के अवलोकन का उल्लेख आवश्यक हो जाता है – ''यह यात्रा निश्चित रूप से उनकी युवावस्था की मुलाकातों से आकार लेती थी, जिसके दौरान उन्होंने अस्तित्व और प्राकृतिक दुनिया के रहस्यों को समझना और समझना शुरू किया, और साथ ही स्नेह, आशावाद, महत्वाकांक्षा, सौंदर्यबोध, विस्मय और जिज्ञासा के विषयों को भी संगीतबद्ध किया।''
- कवि ''पथ के गीत'' नामक संकलन को अपनी साहित्यिक यात्रा का आरंभ मानते हैं। आगे के वाक्य इस कथन की पुष्टि करते हैं:
    - मैं आषाढ़ का उदघाटन मेघ हूँ, मेरी यात्रा में बाधा न डालो।
- पीने के बाद, मैं मानवता की घबराहट के शोर के बीच अपनी आवाज उठाता हूं..

''[22]

- इन प्रारंभिक रचनाओं के ढांचे में, डॉ. ललित शुक्ल के दृष्टिकोणों की पड़ताल करना आवश्यक प्रतीत होता है – ''इस प्रकार का विकास उन जगहों पर अधिक स्पष्ट होता है जहाँ कवि के प्रारंभिक वर्ष कठिनाइयों से भरे रहे हैं।'' वे न केवल समाज के ह्रास, उसकी प्रतिगामीता, उसके अंतर्विरोधों और शोषण को स्वीकार करते हैं, बल्कि उसमें संलग्न भी होते हैं। मैं मिश्र जी के संपूर्ण कृतित्व को आसपास के परिवेश के प्रभावों का परिणाम मानता हूँ।[23] यद्यपि इसे छायावादी काव्य की श्रेणी में रखा गया है, फिर भी ''पथ के गीत'' संकलन में सम्मिलित

[22] मिश्र रामदरशएवं स्मिता मिश्र, दिल्ली, नमन प्रकाशन, भाग 1, प्रथम, वर्ष–1999, पृ0–9
[23] तिवारी, नित्यानंद एवं ज्ञानचंद गुप्त, रचनाकार रामदरश मिश्र, दिल्ली, नमन प्रकाशन, भाग 2, वर्ष–1997, पृ0–8

अधिकांश गीत रूमानियत के विषयों से अलग प्रतीत होते हैं। कवि उस परिदृश्य में प्रवेश करता है, जहाँ प्रकृति और स्नेह के रंग, परिवेश की चुनौतियों, शोषण और अंतर्विरोधों में निहित विडंबनाओं की सुविचारित अभिव्यक्ति के साथ–साथ बिखरे हुए हैं। छायावादी धुनों के बारे में, मिश्र जी ने कहा, ''ये मेरे युवा मन के अपरिष्कृत और वास्तविक भावनात्मक प्रवाह का प्रतीक हैं।''[24]

- उन्होंने आगे कहा, ''यह छायावादी धुनों में निहित कवि की बेचौन आत्मा का प्रतीक है।'' ठीक उसी तरह जैसे किसी झरने की शक्तिशाली ऊर्जा से नुकीले पत्थर चमक उठते हैं और परिष्कृत हो जाते हैं। जैसे–जैसे रास्ते बनते हैं, धुनें छायावादी रचनाओं के सार की तरह, अधिकाधिक काव्यात्मक होती जाती हैं, पात्र आकार लेते रहते हैं, वाक्यांश विलीन होते और नए रूप धारण करते रहते हैं, और सामंजस्य और भी ऊँचा उठता जाता है।[25]
- **अचिह्नित अक्षर**
- मिश्र जी का दूसरा कविता संग्रह, ''बैरंग–बेनाम चिट्ठियाँ'', जो पर्यावरण की उथल–पुथल और पीड़ा को एक नए दृष्टिकोण से चित्रित करता है, 1962 में आस्था प्रकाशन, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित हुआ था। उनके पहले कविता संग्रह, ''पथ के गीत'' के लगभग ग्यारह वर्ष बाद प्रकाशित, ''बैरंग–बेनाम चिट्ठियाँ'' परिपक्वता में एक उल्लेखनीय विकास को दर्शाता है। ग्यारह वर्षों की अवधि उल्लेखनीय रूप से विस्तृत है और गहन चिंतन के योग्य है। मिश्र जी ने प्रस्तावना में लिखा है, ''दस–बारह वर्षों के अंतराल के बाद आपके समक्ष अपना दूसरा कविता संग्रह प्रस्तुत कर रहा हूँ।'' इस अवधि के दौरान, दुनिया बदल गई,

[24] मिश्र रामदरश, मेरे प्रिय गीत, दिल्ली, कंदर्प प्रकाशन, वर्ष–1985, पृ0–7
[25] मिश्र रामदरशएवं स्मिता मिश्र, रचनावली भाग–12, दिल्ली, नमन प्रकाशन, भाग 2, वर्ष–1997, पृ0–122

मैं भी रूपांतरित हुआ, और मेरी कविता भी विकसित हुई। भावनात्मक गहराई और कलात्मक विकास की डिग्री समय–समय पर रचित कविताओं में स्पष्ट दिखाई देगी, जो आमतौर पर दस–बारह वर्षों के महत्वपूर्ण अंतराल में फैली होती हैं।[26]

- इस काव्य संग्रह में कई विशिष्ट विशेषताएँ प्रकट होती हैं, जिनमें सुबोधता, लोक–प्रेरित अभिव्यक्ति पर ध्यान, गहन संवेदनशीलता, लोक संस्कृति की विविध अभिव्यक्तियाँ, साथ ही एकांत और प्राकृतिक जगत के प्रति प्रशंसा जैसे विषय शामिल हैं। चुनिंदा धुनों में 'तुम बिन', 'विदाई से पहले', 'कब से इंतजार', 'मेरी प्यारी रात भर', 'अते घिरा–घिरा', 'हवा', 'फूल जल रहे हैं', 'पके धान जैसी धूप', 'मायानगर', 'शरद आया है', 'फागुन फिर आया है', 'चौत्र आया है', 'बर–बुहानरू', 'तुम बार–बार लौटी हो', 'बदरवा भीग गया है', और 'कभी–कभी' शामिल हैं। 'बादल तुम्हें ढँक रहे हैं, बरसने से बचो', 'मधुपर्व', 'दूर से बुला रहे हैं', 'उदास दिन अब पीछे छूट गए हैं', 'बदरवा की मूसलाधार बारिश', 'तुम भी चले गए', 'खचाखच भरा बर्तन छलक रहा है' आदि। इन धुनों की पड़ताल करने से क्षेत्रीय लोक परंपराओं का एक जीवंत, संपूर्ण और आकर्षक चित्रण सामने आता है। ये गीत न केवल मिश्र जी के सूक्ष्म दृष्टिकोण की एक झलक प्रस्तुत करते हैं, बल्कि उनके जीवन के अनुभवों की गहन परतों को भी उजागर करते हैं। इनमें से अधिकांश धुनों में कवि ने अक्षुण्ण प्राकृतिक वैभव, मन के उल्लास और व्यथा का चित्रण किया है, जबकि स्नेह की भावनाएँ प्रकृति में गहराई से निहित गीतों के माध्यम से व्यक्त की गई हैं।[27]

[26] मिश्र रामदरश, बैरंग बेनाम चिट्ठिया, अहमदाबाद, आस्था प्रकाशन, वर्ष–1962, पृ0–5
[27] मिश्र रामदरश, समकालीन काव्य परिदृश्य और रामदरश मिश्र का काव्य , नई दिल्ली, नमन प्रकाशन, वर्ष–2009, पृ0–73–74

- इस काव्य संकलन में एक नवीन स्वर है। यह नई कविता के मूल सूत्रपात का प्रतीक है। कवि ने अपनी कविताओं में बिम्बात्मकता के माध्यम से अपने अनुभवों को अभिव्यक्त किया है। इस संग्रह में विविध प्रकार की कविताएँ हैं, जिनमें से कुछ लंबी हैं जबकि कुछ संक्षिप्त हैंय इसमें गीत और गजल दोनों शामिल हैं। मिश्रा ने ''मेरे पसंदीदा गीत'' की भूमिका में लिखा है, ''ये प्रगतिवाद और समकालीन कविता के उद्भव का सार प्रस्तुत करते हैं।'' ये गीत व्यक्तियों पर केंद्रित हैं और उनके अनुभवों को दृश्यों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। इनका आकार छोटा है।[28]
- कविताओं का यह संग्रह प्राकृतिक जगत के प्रति गहरे लगाव को खूबसूरती से दर्शाता है। ''एक नीम मंजरी'' कविता मानवता के सार, व्यक्तिगत चित्रों और एक विशिष्ट स्थान से जुड़े भावनात्मक बंधनों और आकर्षण को समेटे हुए है। बिछड़ने के इस चित्रण में, नायक स्वर्ग से विनती करता हुआ दिखाई देता है, ''पर कृपा करके, इस तरह बारिश न होने देना!''
    - मेरा दिल वातावरण में कांपता है एक विशाल खेत में उगते चावल
  - अनजान लोग किसी रजाई की याद दिलाने वाली बंदिशों की निगाहों के नीचे काँपते हैं। यादों का भंडार फूट पड़ा है, और ये बिछड़ने के पल डूब गए हैं.''[29]
- मिश्र की कविताओं में व्यक्तिगत अनुभवों और गहन भावनात्मक समझ की विविधता समाहित है। ये व्यक्तिगत स्तर से लेकर व्यापक समुदाय तक फैली हुई हैं, जो राष्ट्र और विश्व को एक सूत्र में पिरोती हैं। अपने व्यक्तिगत अनुभवों के अलावा,

[28] मिश्र रामदरश, मेरे प्रिय गीत भूमिका, दिल्ली, कंदर्प प्रकाशन, वर्ष–1985, पृ0–7
[29] मिश्र रामदरश, पथ के गीत, , बलिया, उत्तर प्रदेश, राजेन्द्र एण्ड ब्रदर्स प्रकाशन, वर्ष–1951, पृ0–22

मिश्र ने समाज और पर्यावरण, दोनों की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को भी चित्रित किया है। चुनौतियों के बावजूद, कवि का विश्वास अटल हैय वह अटल है।

- मिश्र जी की सामाजिक और व्यक्तिगत विशेषताएँ इस संग्रह के अनेक गीतों और कविताओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। 'नीव के पत्थर', 'कालयात्रा', 'निशान', 'चिट्ठियाँ' जैसी अनेक कविताओं ने इसी अवधारणा के कारण महत्व प्राप्त किया है। इस विषय पर प्रकाश मनु के दृष्टिकोणों का अन्वेषण निश्चित रूप से रोचक है – ''बेयरंग बेनाम चिट्ठियाँ की विशिष्टता उनकी काव्य–यात्रा में एक महत्वपूर्ण बिंदु के रूप में इसके महत्व में निहित है। गीत और कविता का अद्भुत सम्मिश्रण किसी भी साहित्य प्रेमी के लिए इसकी खोज को विशेष रूप से आकर्षक बनाता है।'' ऐसा इसलिए है क्योंकि इससे जुड़ना एक गीतकार के कवि या कवयित्री के रूप में रूपांतरित होने की यात्रा जैसा है। नहीं, शायद मैंने इसे गलत तरीके से व्यक्त किया है – कैसे एक गीतकार अपने युग की आंतरिक और बाह्य चुनौतियों को झेलने के बाद सहज रूप से एक कवयित्री में परिवर्तित हो जाता है – 'बेयरंग बेनाम चिट्ठियाँ' से जुड़ने से हमें इस विकास का साक्षी बनने का अवसर मिलता है।[30]
- मिश्र की कई कविताएँ उनकी कलात्मक स्थिति को दर्शाती प्रतीत होती हैं। इनमें 'आत्म–शोध', 'आज', 'अजनबी', 'काल–यात्री', 'अन्वेषण' आदि शीर्षक शामिल हैं। 'आत्म–शोध' कविता में कवि अपने अस्तित्व के बारे में एक जिज्ञासा प्रकट करते हुए पूछते हैं, ''मैं कौन हूँ?'' 'काल–यात्री' कविता आशावाद और दुःख के उदाहरणों को दर्शाती है, जबकि 'अन्वेषण' कविता अस्तित्व के आनंद को चित्रित करती है।

[30] मनु, प्रकाश, रामदरश मिश्र एक अंतर्यात्रा, दिल्ली, वाणी प्रकाशन, वर्ष–2004, पृ0–212

- फूलबदन यादव ने इस संकलन पर अपने विचार व्यक्त किए हैं – ''यद्यपि बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ का मुख्य विषय कामुकता की ओर झुका है, अन्य भावनात्मक चित्रणों को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।'' ''अस्पताल में दोपहर'', ''तीर्थयात्रा'' और ''सीमा दर्शन'' जैसी कविताओं में कवि अस्पताल के वातावरण की उन्मत्त गतिविधि पर विस्मय और दुःख व्यक्त करते हैं। अस्पताल के कर्मचारी अपने विशिष्ट अनुभवों का वर्णन करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न तरीकों से दूसरों से मिलता है, फिर भी अपार सहानुभूति से घिरा चिकित्सक अपने औजारों के साथ एकाकी रहता है, कभी किसी से सच्चा जुड़ाव या वियोग नहीं करता।''[31]
- वर्तमान युग की गुनगुनी भावनाएँ। अलगाव व्यक्तियों के लिए एक कठिन सत्य है। मिश्रा का इस अनुभूति से सामना और भी गहरा होता जाता है, क्योंकि वह ग्रामीण परिवेश से शहरी परिवेश में प्रवेश करते हैं। यह आंतरिक उथल–पुथल इस एकांत के सार को स्पष्ट करती है।

  - यह एक खाली कक्ष है जो पत्तियों से घिरा हुआ है।
  - मेरी अस्त–व्यस्त जिम दिनचर्या के बीच, ये लय गूंजती रहती हैं।
  - वह फूलों से सजी हुई प्रत्येक साँस पर लेटी रहती थी।
  - जहाँ मकड़ी के जाले थकी हुई दरारों के किनारों पर लटके रहते हैं
  - यह ग्रिल का प्रतिनिधित्व नहीं करता है
  - उस जगह से जहाँ से बार–बार वसंत निकलता है
  - वहाँ उस कोने में लेटा हुआ।

[31] यादव, फूलबदन, रामदरश मिश्र व्यक्तित्व और कृतित्व, , नई दिल्ली, राधा प्रकाशन, वर्ष–1992, पृ0–29

- वह एक खाली कंटेनर के भीतर नष्ट हो गया है।[32]

- जैसा कि डॉ. चंद्रकला त्रिपाठी ने कहा है, ''प्रगतिशील कविता के सार के अनुरूप, कवि की सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता अत्यधिक संलग्न है।'' हालाँकि, दृढ़ प्रगतिवादियों के विपरीत, वह अपने व्यक्तिगत अनुभवों को अपनी काव्य रचनाओं में सहजता से समाहित कर लेते हैं। यह खुलापन उन्हें आत्मीय, सवाक कविता की ओर ले जाता है, और संवेदनशीलता की इसी शक्ति के साथ, वह गीत भी लिखते हैं।''[33] क्या हमें समग्रता पर विचार करना चाहिए? ''रंगहीन, अनाम पत्र'' शीर्षक से काव्य संकलन आधुनिक कविता की आधारशिला प्रतीत होता है। इनमें से प्रत्येक कविता सीधी, सुबोध और सरल है। इनमें किसी भी प्रकार की जटिलता नहीं है। प्रतीकात्मकता और अर्थ का प्रयोग करके, कविताएँ संप्रेषण के माध्यम में परिवर्तित हो जाती हैं।

- **निष्कर्ष**

- रामदरश मिश्र की कविताएँ समाज, प्रकृति और व्यक्ति के जीवन की गहरी सच्चाइयों को उजागर करती हैं। उनके लेखन में छायावादी प्रभाव और सामाजिक जागरूकता का अद्भुत समावेश है, जो उन्हें साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में एक विशिष्ट स्थान देता है। मिश्र जी की कविताएँ न केवल व्यक्तिगत अनुभवों को प्रस्तुत करती हैं, बल्कि यह समाज के व्यापक मुद्दों पर भी गहन विचार करती हैं। उनके काव्य संकलन जीवन के संघर्ष, संवेदनाओं और सामाजिक असमानताओं पर

[32] मिश्र रामदरश एवं स्मिता मिश्र, , नई दिल्ली, नमन प्रकाशन, वर्ष–1999, पृ0–133–134
[33] तिवारी, नित्यानंद एवं ज्ञानचंद गुप्त, रचनाकार रामदरश मिश्र, नई दिल्ली, राधा प्रकाशन, वर्ष–1992, पृ0–6

प्रकाश डालते हैं, जो पाठकों को सोचने और समाज में सुधार की दिशा में प्रेरित करते हैं।

- **संदर्भ**

- सं० श्यामसुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, भाग–3, वर्ष– 1970
- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन–डा0 विवेकीराय, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, वर्ष–1984
- डॉ. शिवाजी नाल, स्वातंत्र्यखंड हिंदी उपन्यासों में वाद्यवाद, दिल्ली, कंदर्प प्रकाशन, वर्ष–2004
- उपाध्याय कृष्णदेव, लोक संस्कृति की रूपरेखा, नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन, वर्ष–2014
- डा0 ज्ञान अस्थाना, हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ, मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, वर्ष– 1989
- डा0 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नोयडा, दिल्ली, मयूर पेपर बैक्स, वर्ष–2013
- डा0 गणेश पाण्डेय, दिल्ली, ग्रामीण समाजशास्त्र, वाणी प्रकाशन, वर्ष– 1994
- डेजी ए0आर0, भारतीय ग्राम्य समाजशास्त्र, जयपुर, रवत प्रकाशन, वर्ष–2016

- दीर्घा पत्रिका, दिल्ली, सितम्बर अंक, वर्ष–1989
- दुबे श्यामाचरण, अनुवाद–योगेश अटल, भारतीय ग्राम, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, वर्ष–2017
- देसाई ए०आर०, भारतीय ग्रामीण–समाजशास्त्र, नई दिल्ली, रावत पब्लिकेशन्स, वर्ष–2016